M.A. I (Pali and Prakrit)(with Credits)-Regular-Semester 2012 Sem I (Old)

MAPAL114-3 - Paper-III : Vinaypitak Va Pali Vyakran

(विनयपिटक व पालि व्याकरण)

P. Pages : 2 **GUG/S/18/2908**

Time : Three Hours Max. Marks : 80

सूचना :- 1. स्वीकृत माध्यमात उत्तरे लिहा.
स्विकृत माध्यम में उत्तर लिखिए।
2. सर्व प्रश्न अनिवार्य आहेत.
सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. ससंदर्भ भाषांतर करा. **20**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

अ) एवं मे सुत्तं। एकं समयं भगवा राजगहे विहरति गिज्झकूटे पब्बते। तेन खो पन समयेन राजा मागधो अजातसत्तु वेदेहिपुतो वज्जी अभियातुकामो होति। सो एवमाह - अहं हि इमे वज्जी एवं महिध्दिके, एवं महानुभावे, उच्छेज्जामि वज्जी, विनासेस्सामि वज्जी, अनयव्यसनं आपादेस्सामि वज्जी' ति। अथ खो राजा मागधो अजातसत्तु वेदेहिपुत्तो वत्सकारं मगधमहामत्तं आमन्तेसि - 'एहि त्वं ब्राह्मण। येन भगवा, तेनुपसङ्कम, उपसङकमित्वा मम वचनेन भगवतो पादे सिरसा वन्दाहि अप्पाबांध अप्पातइकं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छ - 'राजा भन्ते। मागधो अजातसत्तु वेदेहिपुत्तो भगवतो पादे सिरसा वन्दति। अप्पाबाधं अप्पातइकं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छती' ति। एवञ्च वदेहि - 'राजा भन्ते। मागधो। अजातसत्तु वेदेहिपुत्तो वज्जी अभियातुकामो। सो एवमाह - 'अहं हि इमे वज्जी एवं महिध्दिके एवं महानुभावे उच्छेज्जामि वज्जी, विनासेस्सामि वज्जी अनयव्यसनं आपादेस्सामि वज्जी' ति।

ब) अथ खो भगवा राजगहे यथाभिरन्तं विहरित्वा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि - 'आयामानन्द। येन अम्बलट्ठिका तेनुपसङ्कमिस्सामा' ति। 'एवं भन्ते' ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो भगवतो पच्चसोसि। अथ खो भगवा महता भिक्खुसंघेन सध्दिं येन अम्बलट्ठिका तदवसरि तञ सुंद भगवा अम्बलट्ठिकायं विहरति राजागारके। तंत्रपि सुदं भगवा अम्बलट्ठिकायं विहरन्तो राजागारके, एतदेव बहुलां भिक्खूनं धम्मिकथं करोति - इति सीलं, इति समाधि, इति पञ्ञा। सील परिभावितो समाधि महप्फलो होति महानिसंसो। समाधिपरिभाविता पञ्ञा महप्फला होति महानिसंसा। पञ्ञापरिभाषितं चित्त सम्मदेव आसवेहि विमुच्चति। सेय्यथिदं कामासवा, भवासवा, दिट्ठासवा अविज्जासवा' ति।

क) तेन खो पन समयेन सुनीधवस्सकारा मगध महामत्ता भगवन्तं पिट्ठितो पिट्ठितो अनुबन्धा होन्ति। येनज्ज समणो गोतमो द्वारेन निक्खमिस्सति, तं गोतमद्वारं नामं भविस्सति। येन तिथेन गङ्ग नदिं तरिस्सति, तं गोतमतित्थं नाम भविस्सति ति। अथ खो भगवा येन द्वारेन निक्खमि, तं गोतमं द्वारं नाम अहोसि -
अथ खो भगवा येन गङ्गानदी तेनुपसङ्कमि। तेन खो पन समयेन गङ्गानदी पूरा होति समातित्तिका काकपेय्या। अप्पेकच्चे मनुस्सा नावं परियेसन्ति, अप्पेकच्चे उलुम्पं परिये सन्ति, अप्पेकच्चे, कुङ्ल्लं बन्धन्ति पारापारं गन्तुकामा।

2. अ) दीघनिकायात महापरिनिब्बाण सुत्ताचे स्थान आणि महत्वं स्पष्ट करा. **10**
दीघनिकाय में महापरिनिब्बाण सुत्त का स्थान और महत्वं स्पष्ट कीजिए।

OR / अथवा

'सत्त अपरिहानिया धम्मा' स्पष्ट करा.
'सत्त अपरिहानिया धम्मा' स्पष्ट कीजिए।

ब) टिपणे लिहा **कोणतेही दोन.** **10**
टिप्पणियाँ लिखिए **कोई भी दो।**

1) सीलानिसंसा 2) पाटलिगामे नगर मापनं
3) राजगहे 4) सारिपुत्तस्स सीहनादो

3. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

अथ खो मुचलिन्दो नागराजा सकभवना निक्खमित्वा भगवतो कायं सत्तक्खतुं भोगे हि परिक्खिपित्वा उपरिमुध्दानि महन्तं फणं करित्वा अट्ठासि - 'मा भगवन्तं सीतं, मा भगवन्तं उण्हं, मा भगवन्तं डंसमक सवातातपस रीसपसम्फस्सो' ति। अथ खो मुचलिन्दो नागराजा सत्ताहस्स अच्चयेन विध्दं विगतवलाहकं देवं विदित्वा भगवतो काया भोगे विनिवेठेत्वा सकवण्णा परिसंहरित्वा माणवकवण्णं अभिनिम्मिनित्वा भगवतो पुरतो अट्ठासि पज्जलिको भगवन्तं नमस्समानो। अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा तायं वेलायं इमं उदानं उदानेसि -
'सुखो विवेको तुट्ठस्स सुतधम्मस्स पस्सतो।
अव्यापज्जं सुखं लोके पाणभूतेसु संयमो।।
सुखा विरागता लोके कामानं समतिक्कमो।
आस्मिमानस्स यो विनयो एतं वे परमं सुखं ति।

OR / अथवा

अथ खो तपुस्सभल्लिकानं वाणिजानं ञातिसालो हिता देवता तपुस्सभल्लिके वाणिजे एतदवोच 'अयं, मारिसा, भगवा राजायतनमूले विहरति पठमाभिसम्बुध्दो; गच्छथ तं भगवन्तं मन्थेण च मधुपिण्डिकाय च पतिमानेथ, तं वो भविस्सति दीघरत्तं हिताय सुखाया' ति। अथ खो तपुस्सभल्लिका वाणिजा मन्थं च मधुपिण्डिकं च आदाय येन भगवा तेनुपसङकमिंसु उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु। एकमन्तं ठिता खो तपुसभल्लिका वाणिजा भगवन्तं एतरवोचुं पटिग्गण्हातु नो, भन्ते, भगवा मन्थ च मधुपिण्डिकं च, यं अम्हाकं अस्स दीघरत्तं हिताय सुखाय'' ति। अथ खो भगवतो एतदहोसि - 'न खो तथागता हत्थेसु परिग्गण्हन्ति। किम्हि नु खो अहं परिग्गण्हेय्यं पन्थं च मधुपिण्डिकं चा' ति?

ब) ब्रह्मयाचन कथेचा सारांश लिहा. **5**
ब्रह्मयाचन कथा का सार लिखिए।

OR / अथवा

बोधिकथाचा सारांश लिहा.
बोधिकथा का सार लिखिए।

4. अ) तिन्ही काळाची रुपे तयार करा **कोणतेही दोन.** **10**
तिन्हों काल के रुप तयार कीजिए। **कोई भी दो।**

i) कर ii) वद
iii) ठा iv) पस्स

ब) टिपणे लिहा **कोणतेही एक.** **5**
टिप्पणियाँ लिखिए **कोई भी एक।**

i) सद्दनिती व्याकरणकार
ii) कच्चायन व्याकरणकार
iii) धानत्थदिपनी

5. टिपणे लिहा **कोणतेही दोन.** **10**
टिप्पणियाँ लिखिए। **कोई भी दो।**

1) अजपाल कथा 2) महावग्ग
3) विनयपिटक 4) मोग्गल्लायन व्याकरणकार ।

****